"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

डॉ. मनीषा जैन, सहायक प्राध्यपिका, प्रगति महाविद्यालय, रायपुर

प्रस्तावना :–

मानव जीवन में सीखने की प्रक्रिया सार्वभौमिक एवं निरंतर होती है। भारतीय मान्यता के अनुसार शिक्षा शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के शिक्ष् धातु से हुई है। जिसका अर्थ है सीखना और सीखाना। शिक्षा के संबंध में महात्मा गॉधी ने कहा है, "शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जो बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्कृष्ट रूपों को प्रस्तुत कर दें।"

प्लेटो के अनुसार "शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों के द्वारा बालकों में अच्छे नैतिक गुणों का विकास करें।"

डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार "हमें प्राविधिक के लिए नैतिकता का बलिदान नहीं देना चाहिए। अपितु प्राविधिक को इस भाव तथा पर्यावरण में प्रस्तुत करना चाहिए ताकि वह उच्च मानव मूल्यों को शक्तिशाली एवं मजबूत बनाने का साधन बन जावे।"

नैतिकता तथा सदाचार विद्यालय शिक्षा को मूल्योन्मुख बना सकते है। पहले माता–पिता, दादा–दादी घर पर बच्चों को सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों संबंधी शिक्षा कहानियों के माध्यम से सीखाते थे। आज के बदलते परिवेश में यह समाप्तप्राय है।

बालक के नैतिक गुणों को उसके व्यक्तित्व का आधार माना जा सकता है। बालक का नैतिक मूल्यों का स्तर उसके शिक्षण अधिगम को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है।

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में "भारत सहित सारे संसार में कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का संबंध नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से न रहकर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है। यदि शिक्षण का अर्थ हृदय व आत्मा की अवहेलना है तो उसे पूर्ण नहीं माना जा सकता।"

माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर भी बालकों को नैतिक गुणों के महत्व का समझाकर इसे बालकों के व्यक्तित्व में शामिल करना होगा। इसी उम्र में उसे अच्छे और बुरे का भेद कराकर, उसे उच्च शिष्टाचार सिखाकर, उसके नैतिक गुणों का विकास एवं उसे भविष्य के नागरिक बोध के लिए तैयार किया जा सकता है।

बालक में नैतिकता, परोपकार, न्याय, सत्य, आचरण आदि उच्च मूल्यों के प्रति स्थायी भाव जागृत करने के लिए 'मूर्त से अमूर्त', 'स्थूल से सूक्ष्म', 'सरल से विशेष' नियमों का पालन करना चाहिए। इन उद्देश्यों के लिए बालकों को अत्यन्त लोकप्रिय महापरूषों की कहानियों/जीवन वृत्तांत सुनाना चाहिए। इससे उच्च आदर्शों, नैतिकता के प्रति संवेगात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जावेगा जो स्थायी भाव उत्पन्न करने में सहायक होगा।

समस्या कथन :–

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

समस्या वह प्रश्न होता है जिसमें समस्या से संबंधित विभिन्न चरों में प्रकायत्मिक संबंधों को ज्ञात करक समाधान की प्राप्ति की जाती है। अनुसंधान प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रथम चरण समस्या का सही निर्माण होता है। 'समस्या' ग्रीक भाषा से लिया गया शब्द है जिसका अर्थ प्रस्तावित प्रश्न को हल करना है।

जे.सी. राउनसेण्ड के शब्दों में "समस्या एक ऐसा प्रश्नवाचक कथन है जिसमें एक समस्या के समाधान को प्रस्तुत किया जाता है।"

आधुनिक युग में विकास का अर्थ केवल भौतिक साधनों को प्राप्त करना होता जा रहा है। आज के भौतिकवादी युग में शिक्षा का उद्देश्य भौतिक सामग्री जुटाने की कला से अवगत कराना हो गया है। समाज एवं परिवार भी इसी भौतिकवादी दृष्टिकोण से अधिक प्रभावित होते जा रहे है। नैतिक मूल्यों का महत्व कहीं खोता सा जा रहा है। मानव धर्म के बुनियादी मूल्य, शांति, सौहाद्र, सहिष्णुता, प्रेम व स्नेह के भाव कमजोर होते जा रहे है। यह बदलाव हमारे लिए चिन्ता और चिन्तन दोनों का विषय है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ती ने लघु शोध प्रबंध हेतु **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"** समस्या का चयन किया।

अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ:–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्मित परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है –

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उनके उच्च नैतिक मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।
2. माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों व निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ती ने परिसीमा का निर्धारण इस प्रकार किया है :–

(1) प्रस्तुत लघु शोध के लिए रायपुर जिले का चयन किया गया।

(2) प्रस्तुत लघु शोध के लिए रायपुर जिले के अंतर्गत 05 विद्यालयों का चयन किया गया।

(3) प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–

1. **सिंह बलवीर (2003)** – ''उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का पर्यावरण एवं जीवन मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' किया। इसके निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के छात्र–छात्राओं का पर्यावरण तथा धार्मिक सामाजिक प्रजातांत्रिक सौन्दर्यात्मक आर्थिक आनन्दमयी शक्ति व स्वास्थ्य मूल्यों के लिए रुझान समान है। ज्ञानात्मक मूल्य में छात्राओं का रूझान अधिक। पारिवारिक प्रतिष्ठा के प्रति छात्र–छात्राओं का रूझान समान नहीं है।

2. **डानिजा, एम. इवानोविक एवं अन्य (2002)** ने शैक्षिक उपलब्धि का विभिन्न चरों के साथ अध्ययन किया। यह एक क्रास सेक्शनल अध्ययन था। चिली मेट्रोपोलियन क्षेत्र के प्राथमिक और हाई स्कूल के 4509 विद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों पर अध्ययन किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि शैक्षिक उपलब्धि विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, बच्चों की विद्यालयी उम्र, उनका परिवार, शैक्षिक वयवस्था, पोषण, बौद्धिक क्षमता, सामाजिक संस्कृति बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करते है।

3. **मीनू अग्रवाल (2001)** ''राजस्थान में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व अनुशासन आचरण तथा नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' किया । जिसके निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च एवं निम्न समूहों के छात्रों के व्यक्तित्व को विद्यालयी भिन्नता प्रभावित नहीं करती है किन्तु इस भिन्नता का प्रभाव छात्रों के अनुशासनात्मक व्यवहार, आचरण, मानवता, मूल्य, ईमानदारी, नम्रता और श्रमनिष्ठता पर पाया जाता है।

4. **जरीन (2001)** ने परिषदीय एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की गणित में निष्पत्ति एवं कक्षा वातावरण में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य परिषदीय एवं निजी विद्यालयों के छात्रों द्वारा कक्षा में प्रत्यक्षीकृत कक्षा वातावरण की प्रमुख 14 विमाओं तथा गणित की निष्पत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञान करना। इस शोध कार्य से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये –1. परिषदीय व निजी विद्यालयों के छात्रों द्वारा अपनी कक्षाओं में प्रत्यक्षीकृत अधिगम समर्थक वातावरण की 12 में से 11 विमाओं में अन्तर होता है। 2. निजी व परिषदीय विद्यालयों के छात्र अपनी कक्षा में पुरस्कार को समान मात्रा में प्रत्यक्षीकृत करते हैं।

5. **अल सईद (2000)** ने यमनी महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि का वैयक्तिक अध्ययन विधि द्वारा अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य यमनी महिलाओं की शैक्षिक उपब्धि में योगदान देने वाले कारकों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि स्त्रियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक सहयोग, अच्छे वातावरण तथा माता–पिता के सहयोग का प्रभाव पडता है।

समस्या का चर :–

स्वतंत्र चर :– विद्यार्थियों का नैतिक मूल्य

परतंत्र चर :– शैक्षणिक उपलब्धि

शोध विधि :–

प्रस्तुत लघु शोध में शोधर्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि द्वारा जनसंख्या से न्यादर्श लेकर लघु शोध की समस्त प्रक्रिया में प्रतिस्थापित किया है।

जनसंख्या :–

समाजशास्त्र में जनसंख्या से तात्पर्य एक विशेष क्षेत्र में रहने वाले जीवों की कुल संख्या को दर्शाता है। जनसंख्या के अन्दर आने वाला प्रत्येक व्यक्ति कुछ पहलू एक दूसरे में बांटते है जो कि सांख्यिकीय रूप से अलग हो सकता है, लेकिन अगर आमतौर पर देखें तो ये अंतर इतने अस्पष्ट होते है कि इनके आधार पर कोई निर्धारण नहीं किया जा सकता।

न्यादर्श विधि :–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में शोधकर्ती द्वारा रायपुर जिले का चुनाव किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु 100 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी न्यादर्श का चयन किया जायेगा। जिसमें 50 छात्र व 50 छात्राओं का चयन किया गया।

उपकरण का चयनः–

1. नैतिक मूल्य ज्ञात करने हेतु मधुलिका वर्मा एवं विन्धेश्वरी वक्सर पवार द्वारा निर्मित प्रमापीकृत Personal Values Scale का प्रयोग किया गया।

2. शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु डॉ. ए. सेनगुप्ता एवं प्रोफेसर ए. के. सिंग द्वारा निर्मित शैक्षिक उपलब्धि मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण :–

व्यवस्थापन हेतु आंकड़ों को सबसे पहले सारणीयन किया जाता है। सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है उसके पश्चात् सामग्री की विश्लेषण की व्याख्या की जाती है। उपकरण से प्राप्त प्राप्तांकों

अथवा आँकड़ों को विभिन्न तालिकाओं में व्यवस्थित कर उनका विश्लेषण माध्य, मध्यमान, मानक विचलन तथा सहसम्बन्ध की गणना कर की गयी तथा दण्डआरेख द्वारा प्रदर्शित कर, व्याख्या की गयी।

1. अध्ययन के उद्देश्य संख्या –1

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।" के अंतर्गत परिकल्पित परिकल्पना **Ho1**"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उनके उच्च नैतिक मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर सार्थक प्रभाव पाया जावेगा।" का सत्यापन सहसम्बन्ध गुणांक की मदद से किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को सारणी क्रमांक 1 में दर्शाया गया है –

सारणी क्रमांक – 1

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उनके उच्च नैतिक मूल्यों व शैक्षणिक उपलब्धियों के प्राप्तांकों का मध्यमान और सहसंबंध सारणी

चर	संख्या	माध्य	सहसंबंध गुणांक	संबंध
उच्च नैतिक मूल्य	117	66.75	0.192	धनात्मक
शैक्षणिक उपलब्धि	117	75.04		

विश्लेषण :–

उपरोक्त सारणी दर्शाती है कि माध्यमिक स्तर के 117 विद्यार्थियों का उच्च नैतिक मूल्य एवं उनके शैक्षणिक उपलब्धियों का मध्यमान क्रमशः 66.75 व 75.04 है तथा उनके बीच सहसंबंध गुणांक धनात्मक है इसलिए उच्च नैतिक मूल्य जैसे–जैसे विद्यार्थियों में अधिक होते है उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों में भी बढ़ोतरी होती है।

इस प्रकार परिकल्पना क्रमांक – 1

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उनके उच्च नैतिक मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर सार्थक प्रभाव पाया जावेगा।"पुष्ट होती है।

दण्ड आरेख संख्या –1

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उनके उच्च नैतिक मूल्यों व शैक्षणिक उपलब्धियों के प्राप्तांकों का मध्यमान और सहसंबंध का दण्ड आरेख

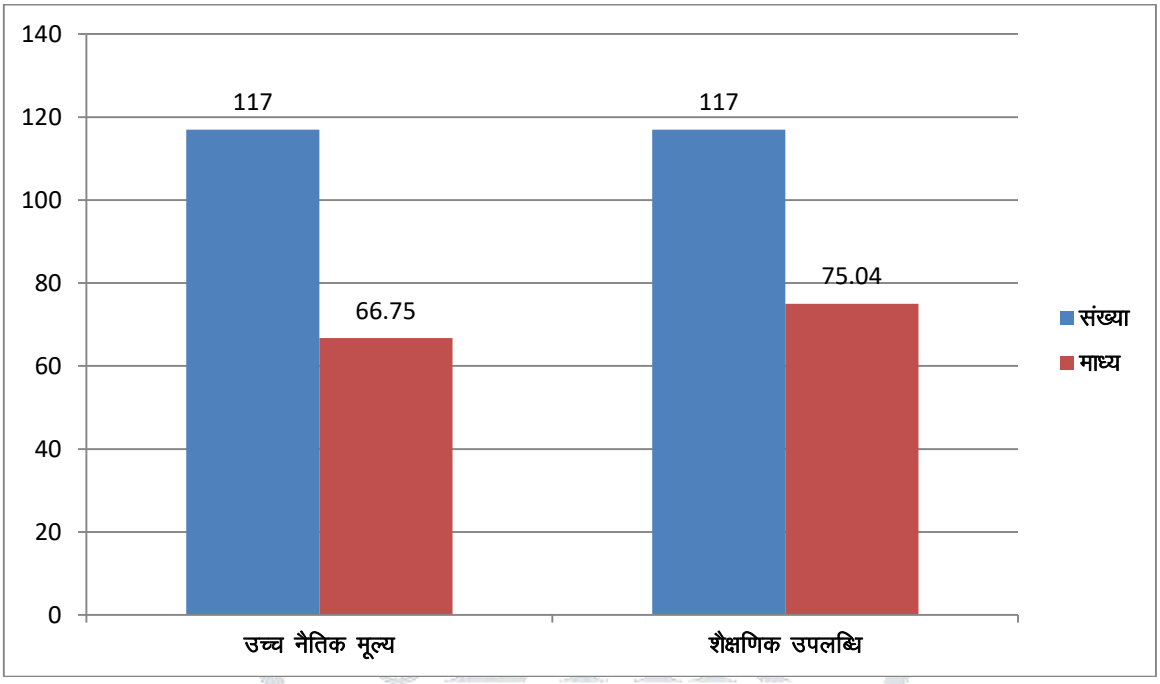

2. अध्ययन के उद्देश्य संख्या –2

"माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का अध्ययन करना। " के अंतर्गत परिकल्पित परिकल्पना **Ho2** "माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों व निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सार्थक अंतर पाया जायेगा। " का सत्यापन क्रांतिक अनुपात की मदद से किया गया है, जिसके विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को सारणी क्रमांक 2 में दर्शाया गया है –

सारणी क्रमांक – 2

माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों व निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रांतिक अनुपात दर्शाने वाली सारणी

उपलब्धि	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	CR क्रांतिक अनुपात	सार्थक / सार्थक नहीं
उच्च नैतिक	117	66.75	2.13	14.8	.01 स्तर पर सार्थक
निम्न नैतिक उपलब्धि	83	55.59	7.01		

विश्लेषण :–

सारणी से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले 117 विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का मध्यमान 66.75 तथा निम्न नैतिक मूल्यों वाले 83 विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का मध्यमान 55.59 है तथा दोनों का प्रमाप विचलन क्रमशः 2.19 व 7.01 है। उच्च नैतिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों का मध्यमान निम्न नैतिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है अर्थात् उच्च नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थी निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों से श्रेष्ठ है।

उच्च तथा निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों के मध्यमान में अंतर की सार्थकता के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई जो 14.8 प्राप्त हुआ। 198 Df के लिए .01 स्तर पर CR का सारणी मूल्य 2.60 है जो गणनामूल्य 14.8 से काफी कम है अर्थात् उच्च नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों व निम्न नैतिक मूल्य वाले विद्याथियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जावेगा।

इस प्रकार परिकल्पना – 2

"माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सार्थक अंतर पाया जावेगा।" पुष्ट हुई।

दण्ड आरेख संख्या –2

माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों व निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं क्रांतिक अनुपात दर्शाने वाला दण्ड आरेख

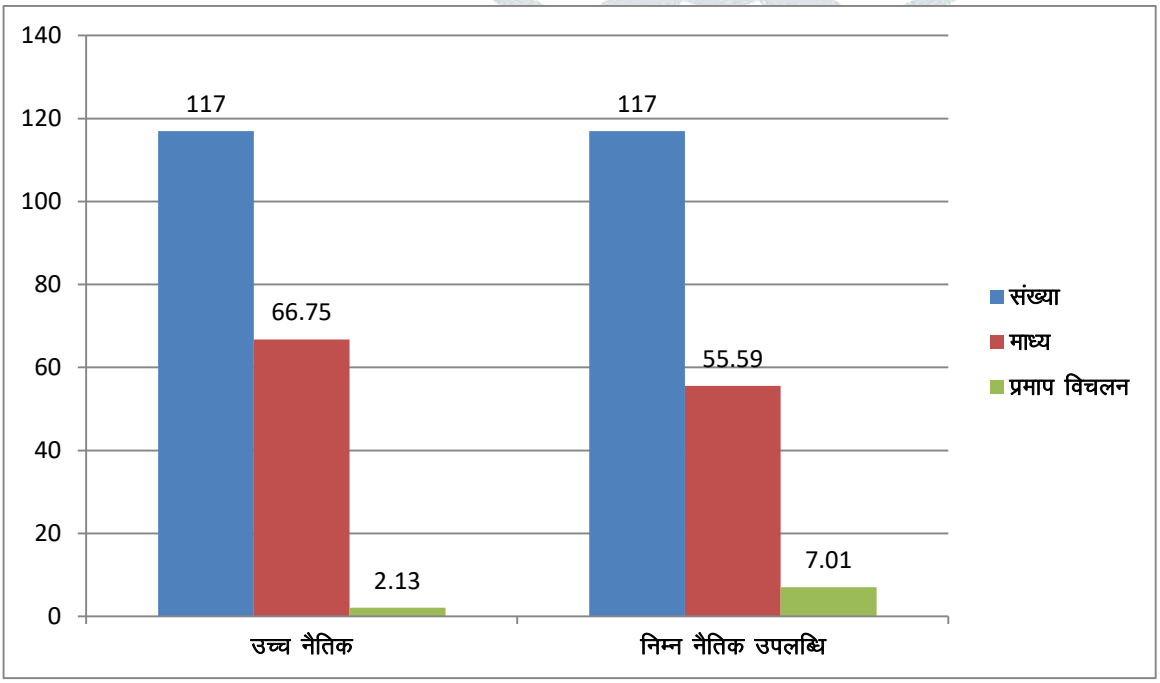

निष्कर्षः–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उनके उच्च नैतिक मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर सार्थक प्रभाव पाया गया है।

2. माध्यमिक स्तर के उच्च नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों व निम्न नैतिक मूल्यों वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सार्थक अंतर पाया गया है।

सुझाव :–

1. नैतिक मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम का सक्रिय अंश बनाया जावे।

2. स्वयं शिक्षकों को नैतिक मूल्यों के अनुरूप आचरण नियत करना होगा।

3. स्कूलों में नियमित रूप से पाठ्यसहगामी क्रियाएं आयोजित कर इनकी जिम्मेदारियां विद्यार्थियों के मध्य विभाजित कर दी जावें।

4. विद्यार्थियों को अनुशासन के क्षेत्र में आत्मनियंत्रण का प्रशिक्षण दिया जाना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1- अस्थाना, एम., एवं वर्मा, के. बी. (2008). व्यक्तित्व मनोविज्ञान. दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।

2- कुमार, डी. (2012). समाजशास्त्र. नई दिल्ली : टाटा मैकग्रा हिल एजूकेशन लिमटेड।

3- गुप्ता, एस. पी. (2007). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

4- राय, पी. (2010–11). अनुसंधान परिचय. आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन।

5- वोहरा, ए. आर. (2006). मानसिक स्वास्थ्य और मनःचिकित्सा. दिल्ली : आर्य प्रकाशन मंडल।

6- पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान. आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन.

7- शर्मा, डी. एल. (2008). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो

8- shodhganga.inflibnet.ac.in/

9- http://en.wikipedia.org/wiki/Social_competence Retrieve

10- http:// advan.physiology.org/content/by/year Retrieve